भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी

मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका

Peer Reviewed

संभव की सीमा जानने का केवल एक ही तरीका हैं असंभव से भी आगे निकल जाना

ISSN 0973-9777
GISI Impact Factor 3.5628
वर्ष-११ अंक-१ & २
जनवरी & मार्च २०१७

एम.पी.ए.एस.वी.ओ.
द्वारा आन्वीक्षिकी सदस्य
सहसंपोजन से प्रकाशित

आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका
वर्ष-११ अंक-१ जनवरी-२०१७

शोध प्रपत्र

विवेकानन्द का नीतिशास्त्र -डॉ0 मनोज कुमार अग्निहोत्री 1-3
ईश्वर का स्वरूप एवं कार्य : विवेकानन्द दर्शन -डॉ0 मनोज कुमार अग्निहोत्री 4-6

मोहन राकेश के नाटकों में स्त्री पात्र -डॉ0 नमिता जैसल 7-14
तुलनात्मक साहित्य : हिन्दी और मलयालम साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन-
प्रारम्भिक प्रयास पुराना भाव व नया अर्थ -डॉ0 रमा पद्मजा वेदुला 15-19

संत रमइया की प्रगतिशील चेतना -डॉ0 सच्चिदानन्द द्विवेदी 20-25
क्रान्तिकारी कवि के रूप में श्रीकृष्ण 'सरल' का साहित्यिक प्रदेय -डॉ0 रमेश कुमार टण्डन 26-29

सुहाग के नुपूर में वेश्या जीवन और सुहाग सुख का अन्तर्द्वन्द्व -डॉ0 कल्पना बाजपेयी 30-33
वेद भाषा है भोजपुरी संस्कृत की लोकभाषा -संजय तिवारी 34-39

राष्ट्रवाद के अमर शिल्पी -प्रो0 अंजली श्रीवास्तव 40-43
मीडिया में पेड न्यूज का बढ़ता प्रभाव -कमल चौहान 44-46

विज्ञापन में बढ़ती कामुकता/ अश्लीलता -रवि प्रकाश सिंह 47-53
शिक्षा के सतत् विकास में स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता -दीप्ति सजवान एवं डॉ0 अनोज राज 54-58

स्त्री शिक्षा में संगीत -डॉ0 पौलमी चटर्जी 59-61
स्त्रियों के प्रति अम्बेडकर का योगदान -डॉ0 धनञ्जय कुमार 62-64

इलाहाबाद जनपद की अभिलेखिक एवं मुद्रा सम्पदा -डॉ0 विजया तिवारी 65-70
काशी की संगीत परम्परा : गायन के विशिष्ट संदर्भ में -डॉ0 पौलमी चटर्जी 71-73

भारत और एशियाई प्रान्त क्षेत्र : एक मूल्यांकन -डॉ0 सीमा रानी 74-76
"लोकतंत्र का विकास व सफलता की शर्तें तथा भारतीय लोकतंत्र की वर्तमान स्थिति" -पंकज राठौड़ 77-80

भ्रष्टाचार : देश के लिए नासूर -डॉ0 सीमा रानी 81-83
प्राचीन भारतवर्ष में शल्य प्रसव द्वारा श्री कृष्ण जन्म -डॉ0 डी0पी0 सिंह एवं डॉ0 शरदेन्दु बाली 84-89

संगीत के रोजगारपरक आयाम -डॉ0 पौलमी चटर्जी 90-93
मम्मट के दृष्टिकोण में "गुणीभूतव्यङ्ग्य -काव्य" -डॉ0 मनीषा शुक्ला 94-96

शिशुपालवध महाकाव्य में माधुर्यगुण-कृत सौन्दर्य -सुधा श्रीवास्तव 97-100

प्रिंट ISSN 0973-9777, वेबसाइट ISSN 0973-9777

पत्रावली संख्या V-34564, पंजीकरण संख्या 533/2007-2008
अन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777

भारतीय शोध समग्र पत्रिका (2017) **11,26-29**
प्रकाशनार्थ स्वीकृत 26 दिसम्बर 2016

क्रान्तिकारी कवि के रूप में श्रीकृष्ण 'सरल' का साहित्यिक प्रदेय

डॉ0 रमेश कुमार टण्डन*

लेखक का घोषणा-पत्र

भारतीय शोध पत्रिका अन्वीक्षिकी में प्रकाशनार्थ प्रेषित *क्रान्तिकारी कवि के रूप में श्रीकृष्ण 'सरल' का साहित्यिक प्रदेय* शीर्षक लेख/ शोध प्रपत्र का लेखक मैं रमेश कुमार टण्डन घोषणा करता हूँ कि लेखक के रूप में इस लेख की सभी सामग्रियों की जिम्मेदारी लेता हूँ, क्योंकि मैंने स्वयं इसे लिखा है और अच्छी तरह से पढ़ा है और साथ ही अपने लेख/ शोध प्रपत्र को शोध पत्रिका अन्वीक्षिकी में प्रकाशित होने की स्वीकृति देता हूँ। यह लेख/ शोध प्रपत्र मूल रूप में या इसका कोई अंश कहीं और नहीं छपा है और न ही कहीं मैंने छपने के लिये भेजा है। यह मेरी मौलिक कृति है। मैंने शोध पत्रिका अन्वीक्षिकी के सम्पादक मण्डल को अपने लेख के संशोधन एवं सम्पादन की पूर्ण अनुमति देता हूँ। अन्वीक्षिकी में लेख प्रकाशित होने पर इसके कापीराइट का अधिकार सम्पादक को देता हूँ।

सारांश

युग की धारा के साथ न बहकर संघर्ष–पथ चुनने वाले कवि श्रीकृष्ण 'सरल' ने यह घोषणा की थी–''होंगे वे कोई और किनारों पर बैठे, मैं होड़ लगाया करता हूँ मँझधारों से।'' इसने राष्ट्रभक्तों को जन–जन तक पहुँचाने के लिए न सिर्फ अपना जीवन होम दिया बल्कि परिवार के सुखों की भी कभी परवाह नहीं की। १२४ ग्रंथों के प्रणेता श्री सरल जी को क्रान्तिकवि के रूप में जाना जाता है। इन्होंने अनेक शहीदों पर महाकाव्य तक रच डाले और वह भी प्रामाणिक।

कूटशब्द – क्रान्तिकारी कवि श्रीकृष्ण 'सरल'।

संक्षिप्त परिचय

''क्रान्ति के जो देवता, मेरे लिए आराध्य/ काव्य साधन मात्र, उनकी वंदना है साध्य'' (– श्रीकृष्ण 'सरल')

श्रीकृष्ण 'सरल' जी का जन्म, अंग्रेजी कैलेण्डर के अनुसार जिस वर्ष जलियावाले बाग में सामूहिक नरसंहार की दुर्घटना को जनरल डायर ने अंजाम दिया, उसकी प्रथम तारीख को हुआ। और मुझे लगता है कि इसीलिए सरल जी के रूप में भारत में एक क्रान्ति कवि का जन्म ऐसे विरोधों के लिए उस समय हुआ। क्रान्तिकवि के रूप में एक नहीं अनेक प्रमाण है, क्रान्तिकारी नेताजी सुभाषचन्द्र बोस पर १४–१५ पुस्तकें लिख डालना, आठ बार दिल के दौरे पड़ने के बावजूद लिखना नहीं छूटना, सारे कार्य स्वयं करना, अपने चरित्र नायकों के तथ्य संकलन हेतु बीस किमी की यात्रा करना, एक लाख पच्चीस हजार पृष्ठ का साहित्य लिखना, 'जय हिन्द' नाम से सुभाषचन्द्र बोस पर उपन्यास लिखना, चन्द्रशेखर आजाद पर महाकाव्य और उपन्यास लिखना, भगतसिंह पर महाकाव्य लिखना, पाँच खण्डों में 'क्रान्तिकारी कोष' लिखना, निजी व्यय से २० लाख लगाकर अपना साहित्य छापना,

* सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय (स्वशासी) रायगढ़ (छ0ग0) भारत

© लेखक 2017, एम0पी0ए0एस0वी0ओ0 मुद्रण एवं अन्वीक्षिकी माध्यम सहसंयोजन से प्रकाशित, सर्वाधिकार सुरक्षित मनीष प्रकाशन। आज्ञा हेतु कृपया सम्पर्क करें : E-mail : maneeshashukla76@rediffmail.com & ijraeditor@yahoo.in, इस प्रपत्र को www.anvikshikijournal.com पर पढ़ें

जगह–जगह कंधे पर ढोकर अपने साहित्य को ले जाकर ठेले पर रखकर १५ लाख का नुकसान उठाकर बेचना, प्रतिदिन ८ घंटे का लेखन कार्य आँखों में मोतियाबिंद होते तक करना व शहीदों के बारे में जानकारी एकत्रित करने के लिए अण्डमान निकोबार, बर्मा, मलेशिया, थाईलैण्ड, सिंगापुर, हांगकांग, जापान, शंघाई, सुमात्रा, फारमोशा, ताईहोकु, ताईवान, पाकिस्तान, रंगून, रोम, टोकियो, जर्मनी, नेपाल और दक्षिण पूर्व एशिया के कई देशों में भटकना तथा इस यात्रा के लिए पैतृक सम्पत्ति को बेच डालना सहज कार्य नहीं है। अन्ततः वे ७७ वर्ष की आयु में ०२ सितम्बर २००० को अमरत्व को प्राप्त हुए।

आचार्य शैलेन्द्र पाराशर के अनुसार, श्री सरल जी के पूर्वज जमींदार परिवार से सम्बन्ध रखते थे जो अंग्रेजों के विरूद्ध लड़ते हुए विद्रोही के रूप में फाँसी पर चढ़ा दिए गए। "शहीदों पर लिखी इनकी पुस्तक 'भगतसिंह' को छापने जब कोई प्रकाशक नहीं मिला तो उन्होंने पत्नी के जेवर बेचकर और छह प्रतिशत ब्याज पर पैसा लेकर १९६४ में यह महाकाव्य छपवाया था। इस महाकाव्य के लोकार्पण के लिए उन्होंने अमर शहीद भगतसिंह की माँ स्व० विद्यावती जी को उज्जैन आने के लिए स्वयं आमंत्रित किया और उन्होंने अपनी स्वीकृति भी दे दी। जब वे उज्जैन आई तो नगर के इतिहास में उनका शानदार स्वागत हुआ और एक शोभा यात्रा भी निकाली गई। लोकार्पण स्थल पर जब उनकी गोद में श्रीकृष्ण 'सरल' ने 'भगतसिंह' महाकाव्य की प्रति रखी तब वे बोली थीं – 'आज ऐसा लगा कि मेरा बेटा फिर से मेरी गोद में आकर बैठ गया है।"

क्रान्ति के स्वर

जब 'सरल' जी हाई स्कूल में पढ़ते थे, जब वार्षिक समारोह में, अभिव्यक्ति पर पूर्णतः प्रतिबंध के बावजूद, पुलिस अधीक्षक के समक्ष, उन्होंने निर्भीकता का परिचय इस प्रकार दिया– "मेरी इस छोटी सी कुटिया में क्यों डाली तुमने चिनगारी?/ मैं कहता लपटें चूम– चूम, आई मेरी भी बारी। अब मैंने छोड़ दिया रोना, आँखों में पानी भर लाना/ अन्याय और अत्याचारों को, शीष झुकाकर सह पाना। अब तुम्हें देखने होंगे, निज आँखों में खण्डहर,/ मैं आज क्रान्ति की वीणा पर, गाता हूँ ये विद्रोही स्वर। तो सावधान! अब देखो तुम, मुझमें कितनी है आग भरी/ इसमें तुमको जलना होगा, जीवन की ममता मोह त्याग। अब माँ के मौन इशारों पर, है बलि होने की तैयारी/ मेरी इस छोटी सी कुटिया में, क्यों डाली तुमने चिनगारी?"[१]

महाकाव्य क्रान्तिगंगा में वे आगे लिखते हैं, "मैं गायक हूँ उन गर्म लहू वालों का ही,/ जो भड़क उठे ऐसे अंगारे लिखता हूँ। मैं लिखता, उनकी शौर्य कथाएँ लिखता हूँ,/ उनके तेवर के तेज दुधारे लिखता हूँ। मैं फूल नहीं काँटे अनियारे लिखता हूँ।"[१]

अमर शहीदों के गायक श्रीकृष्ण जी अपने कवि–कर्म को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं, "मैं चौराहे, चौराहे पर, ये प्रश्न उठाया करता हूँ,/ मैं अमर शहीदों का चारण, उनके यश गाया करता हूँ। यह सच है, याद शहीदों की, हम लोगों ने दफनाई है,/ यह सच है, उनकी लाशों पर चलकर आजादी आई है।"[१]

देश पर अपने आपको उत्सर्ग करने की अपील 'सरल' जी की इन काव्य पंक्तियों पर स्पष्ट झलकती है– "हम स्वयं नहीं धरा के लिए जिएं,/ हम प्राण धरा हित दें, उसका सम्मान करें। यह जीवन जिसको हम अपना कहते,/ यह जीवन अपना हर्गिज नहीं, वतन का है।"

जिन्हें अपने देश के प्रति कोई जिम्मेदारी का अहसास नहीं, उन्हें इन शब्दों में धिक्कारा गया है– "जिसे देश से प्यार नहीं है,/ जीने का अधिकार नहीं है।"

अदम्य साहस, वीरता, पुरूषार्थ से पूर्ण लेखन कार्य श्री सरल जी के काव्य सर्वत्र दिखाई देता है– "विश्व के इतिहास में अध्याय तुम पढ़ लो हमारा/ चमकते स्वर्णाक्षरों में लिखा भारतवर्ष होगा। एक पत्ते पर अहिंसा की लिखी वाणी मिलेगी/ दूसरे पर गरजता संघर्ष का उत्कर्ष होगा।"[१]

वीर सपूत के त्याग व बलिदान पर गर्व करते हुए एवं उनको आदर्श मानते हुए कविवर लिखते हैं– "पूजे न शहीद गए/ तो फिर यह पंथ कौन अपनाएगा?/ तोपों के मुँह से कौन अकड़ अपनी छातियाँ अड़ाएगा?/ चूमेगा फंदे कौन गोलियाँ कौन वक्ष पर खाएगा?/ अपने हाथों अपने मस्तक फिर आगे कौन बढ़ाएगा?"[१]

"प्रेरणा शहीदों से हम अगर नहीं लेंगे। आजादी ढलती हुई सांझ हो जाएगी। यदि वीरों की पूजा हम नहीं करेंगे तो/ यह सच मानो वीरता बांझ हो जाएगी।"[१]

अपने शेष बचे जीवन की योजना बनाते हुए सरल जी कहते हैं– "जो शेष रहे वे दिन न व्यर्थ जाएंगे। हम धरती माँ के लिए काम आएंगे। हम क्या कर सकते, कहें न, कर दिखलाएँ। माँ के हित मरकर शहीद कहलाएँ।"[७]

शहीद मंगल पांडे का जिक्र करते हुए इन्होंने उस अमर बलिदानी का वर्णन इस प्रकार किया– "आखिर उनने वह किया, रहे करते वे लोग/ उपहार वीर–भट को फांसी का दे डाला। वह लटक गया हँसते–हँसते माँ का सपूत/ वह झूल गया मां के खैरख का रखवाला। स्वातंत्र्य यज्ञ बैरकपुर में प्रारम्भ हुआ/ मंगल पाण्डे ही उसका बना पुरोधा था। दो समाधियां डाली फिरंगियों की उसने/ वह वीर पुरुष था, बलिदानी था योद्धा था।"[८]

शहीद भगतसिंह पर उन्होंने अपनी लेखनी को कुछ इस तरह रक्त से सिंचित किया– "लोग कहे बन्दूक कलम थी वह सनद्ध सिपाही था/ शौर्य–वीरता का गायक वह काँटों का राही था/ लिख बलिदान कथाएं वह लोगों को आमृत करता था/ उनकी शिथिल शिराओं में उफनाता लावा भरता था"[९]

चन्द्रशेखर आजाद पर इनके शब्द– "आजाद, भावनाओं का वह भूकम्प विकट/ जिस धक्के से साम्राज्यवाद थर–थरा उठा/ आजाद वज्र का था ऐसा आघात प्रबल/ अत्याचारों का पर्वत भी चरमरा उठा"[१०]

मातृभूमि को सबसे श्रेष्ठ मानते हुए सरल जी लिखते हैं– "है मातृभूमि से कोई बड़ा न होता,/ उसकी माटी होती हमको चंदन है। है मातृभूमि की महिमा सबसे न्यारी,/ हर सांस–सांस करती उसका वंदन है।"[११]

श्रीकृष्ण 'सरल' ने क्रान्ति सैनिकों को कहा कि राष्ट्र की धरती और समाज से तुम्हारा रिश्ता सिर्फ एक सैनिक का है जिसका सर्वोच्च पुरस्कार वीरगति पाने में है– "सैनिक, सैनिक होता है, वह कुछ और नहीं/ वह नहीं किसी का भाई, पुत्र और पति है,/ कर्त्तव्यसजग प्रहरी वह धरती माता का है/ जो पुरस्कार उसका सर्वोच्च, वीर–गति है।"[१२]

"वह रण हो या आंदोलन हो, जन हित में हो/ हथियार और दृढ़ कवच हमारा जन–बल हो,/ जन–शक्ति बड़ी होती है सभी शक्तियों से/ जन–संबल में विश्वास हमारा अविचल हो।"[१३]

क्रान्ति क्या है, इस पर सरल जी का मत इस प्रकार है– "जब क्रमिक और होती है सहज, प्रक्रिया गति/ तो ऐसा परिवर्तन विकास कहलाता है/ जब विस्फोटित जैसा होता है परिवर्तन/ तो वही, क्रांति की अभिनव संज्ञा पाता है।"[१४]

जिन क्रान्तिकारियों ने अपने आप को देश के लिए न्यौछावर कर दिया, उन शहीदों से ही आज देश स्वाधीन हो पाया है। इनके लिए सरल जी का कथन– "वे अमर न होते तो भारत मुर्दों का देश कहा जाता,/ जीवन ऐसा बोझा होता जो हमसे नहीं सहा जाता,/ यह सच है दाग गुलामी के उनने लहू से धोए है,/ हम लोग बीज बोते, उनने धरती में मस्तक बोए हैं।"[१५]

अंत में, निष्कर्षतः, श्रीकृष्ण 'सरल' जी को हम शहीदों का चारण कह सकते है– "मैं अमर शहीदों का चारण, उनके यश गाया करता हूँ। जो कर्ज राष्ट्र का खाया है, बस उसे चुकाया करता हूँ।।

संदर्भ

[१](संपादक) डॉ० सतीश चतुर्वेदी –हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा एवं श्रीकृष्ण 'सरल', राजेश्वरी प्रकाशन गुना २०१३ पृष्ठ संख्या ३६ –३७ (राष्ट्रीय महाकवि श्रीकृष्ण 'सरल' ने रचा विश्व कीर्तिमान– आचार्य शैलेन्द्र पाराशर)

[२]सरल, श्रीकृष्ण –महाकाव्य क्रान्तिगंगा, विचार बिन्दु, पृष्ठ संख्या २८

[३]सरल, श्रीकृष्ण –महाकाव्य क्रान्तिगंगा, विचार बिन्दु, पृष्ठ संख्या ५९

[४]सरल, श्रीकृष्ण –महाकाव्य क्रान्तिगंगा, विचार बिन्दु, पृष्ठ संख्या ५७

[५](संपादक) डॉ० सतीश चतुर्वेदी –हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा एवं श्रीकृष्ण 'सरल', राजेश्वरी प्रकाशन गुना २०१३, पृष्ठ संख्या ६७ (क्रान्तिकारियों के अमर गायक श्रीकृष्ण 'सरल'– डॉ० सरोज जैन)

[६]क्रान्तिकारियों के अमर गायक श्रीकृष्ण 'सरल'– डॉ० सरोज जैन, पृष्ठ संख्या ६८

[७]क्रान्तिकारियों के अमर गायक श्रीकृष्ण 'सरल'– डॉ० सरोज जैन, पृष्ठ संख्या ६९

[८]क्रान्तिकारियों के अमर गायक श्रीकृष्ण 'सरल'– डॉ० सरोज जैन, पृष्ठ संख्या ६९–७०

[९](संपादक) डॉ० सतीश चतुर्वेदी –हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा एवं श्रीकृष्ण 'सरल', राजेश्वरी प्रकाशन गुना २०१३, पृष्ठ संख्या ७९ (रक्त कलम की अर्चना– श्रीकृष्ण 'सरल' का व्यक्तित्व एवं कृतित्व– डॉ० रामसेवक सोनी 'प्रकाश')